1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष–9, अंक–2, अक्टूबर–नवम्बर 2025, ₹ 100/–

कला और कलाकारों को समर्पित
राष्ट्रीय पत्रिका का 29 वाँ वर्ष
137 वाँ अंक...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

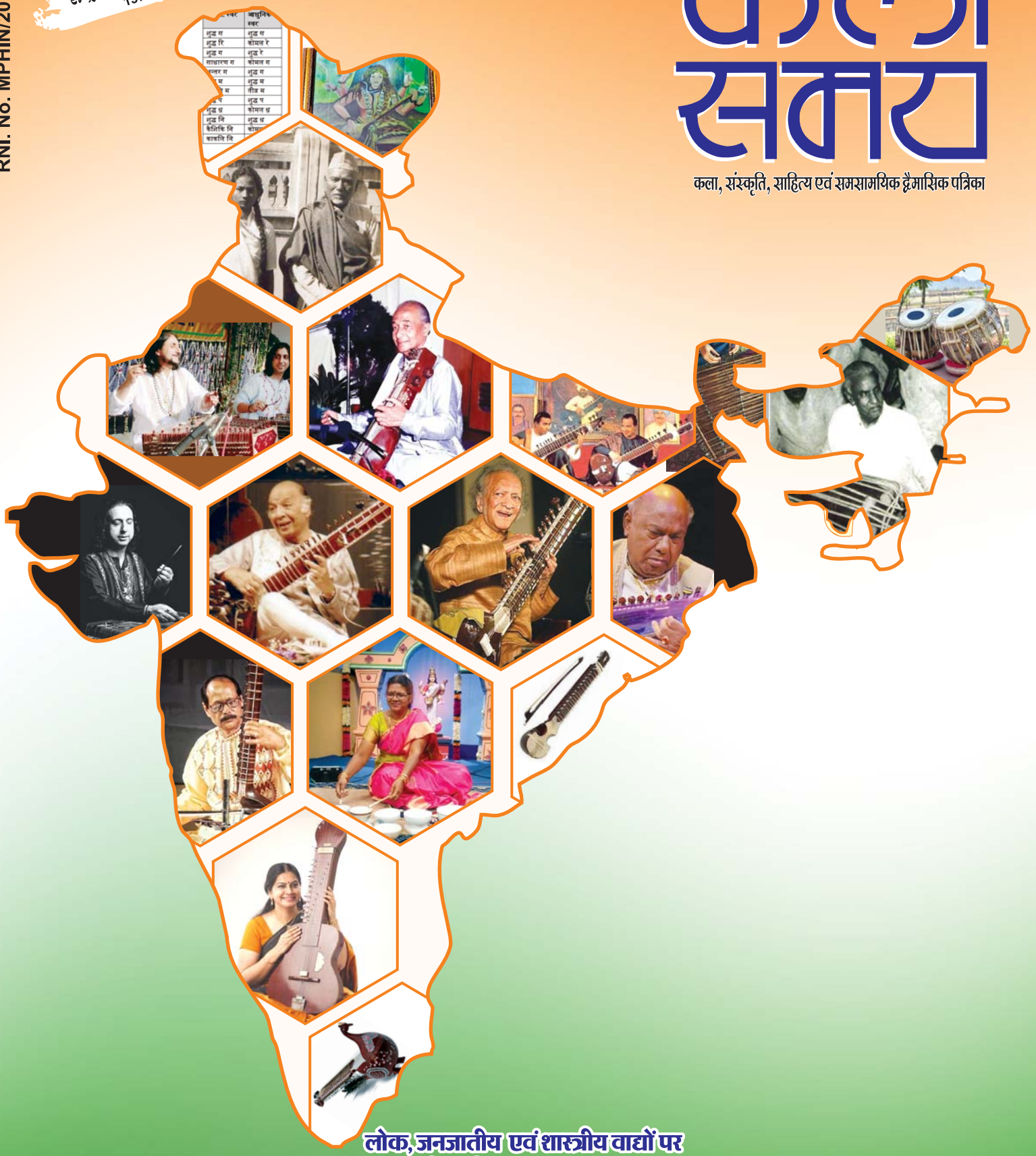

लोक, जनजातीय एवं शास्त्रीय वाद्यों पर केन्द्रित विशेषांक (भाग-2)

अतिथि संपादक : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

कला समय के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास का विशेष सम्मान

श्रीमंत महाराजा यशवंत राव होल्कर प्रथम की छत्री स्थल भानपुरा महाराजा यशवंत राव होल्कर की 214 वीं स्मृति तिथि पर आयोजन संपन्न होल्कर युगीन ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजें महाराष्ट्र, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के श्रद्धालुओं ने अर्पित की पुष्पांजलि

भानपुरा, 28 अक्तूबर 2025। भानपुरा को एक समय अपनी राजधानी का गौरव दिलाने वाले, स्वतंत्रता प्रेमी नरेश श्रीमंत यशवंत राव होल्कर प्रथम की 214 वीं पुण्यतिथि पर गरिमा मय आयोजन का शुभारंभ ध्वज उतोलन एवं शिवार्चन से शुरू हुआ। स्वागत भाषण राम भाऊ लांडे ने दिया। आयोजन समिति ने सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न, पुष्पमाला अंग वस्त्र भेंट कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधायक देवीलाल धाकड़ ने आश्वस्त करते हुए कहा कि होल्कर युगीन सभी ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजा जाने और उनका संरक्षण किए जाने का प्रयास शासन प्रशासन के साथ मिलकर किया जावेगा। भानपुरा अंचल ऐतिहासिक दृष्टि से संपन्न है। प्रमुख वक्ता घनश्याम होल्कर इतिहासकार भरतपुर ने ओजस्वी वाणी मे भावुक कर देने वाला प्रेरक वक्तव्य दिया और होल्कर युगीन विरासतों को बचाने की बात कही। कार्यकम में भंवरलाल श्रीवास संपादक कला समय भोपाल, और चित्रकार अनुराग मेहता उदयपुर,को महाराजा यशवंत राव होलकर प्रथम के 214 स्मृति दिवस सहारोह में महाराज का छत्री स्थल पर श्री श्रीवास और श्री मेहता ने अपने विचार भी रखें तथा आभार व्यक्त किया।कमलेश राव पंधरीनाथ ढाले, रामेश्वर काले, सुभाष मेदंड, रतेश लबासे, हरीश जोहरे महाराष्ट्र ने तथा पुराविद डॉ. प्रद्युमन भट्ट ने संबोधित किया। कार्यक्रम में ठाकुर अर्जुन सिंह चन्द्रावत, डॉ. देवेंद्र कुमार, डॉ अवधेश पाण्डेय तथा होल्कर कॉलेज के प्राध्यापक, धर शर्मा लक्ष्मी नारायण सोनी अजय तिवारी, सहित राजस्थान मध्यप्रदेश के विभिन्न शहरों से आये श्रद्धालु उपस्थित थे। आभार मल्हारगढ़ के समाजसेवी पूर्व पार्षद मनोज फनसे ने माना, समारोह के दौरान कला समय के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास को विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। संचालन राम भाऊ और घनश्याम होल्कर ने किया।

जन परिषद संस्था मंदसौर द्वारा प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास का सम्मान

मंदसौर। साहित्य संस्कृति और संस्कार परस्पर जुड़े हुए हैं इनका संरक्षण भविष्य की पीढ़ी को राष्ट्र भाव से जोड़ने में अहम भूमिका है श्री श्रीवास ने मंदसौर में चल रही साहित्यिक सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि यह अच्छे वातावरण निर्माण में सहायक है। समारोह के विशिष्ट अतिथि दशपुर प्राच्य शोध संस्थान निदेशक एवं वरिष्ठ इतिहासकार श्री कैलाश चन्द्र पाण्डेय ने हाल में नई दिल्ली में सम्पन्न संस्कृति मंत्रालय की अंतर्राष्ट्रीय पाण्डु लिपि एवं लिपि शास्त्र सेमिनार में शामिल होने और अपनी प्रस्तुति का विवरण दिया। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश से दिल्ली के विज्ञान भवन में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में श्री पाण्डेय एकमात्र प्रतिनिधि थे और केंद्रीय संस्कृत एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने श्री पाण्डेय की विशिष्टता को सम्मान दिया। जन परिषद समारोह की अध्यक्षता सार्थक संस्था फाउंडर एवं पर्यावरणविद डॉ उर्मिला सिंह तोमर ने की। संचालन डॉ घनश्याम बटवाल ने किया और आभार सचिव श्री नरेंद्र कुमार त्रिवेदी ने माना। इसके पूर्व साहित्यकार श्री भंवरलाल श्रीवास एवं पुरातत्व विद्वान श्री कैलाश चन्द्र पाण्डेय का अभिनन्दन और सम्मान जन परिषद मंदसौर चैप्टर द्वारा किया गया। इस मौके पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद जिला सचिव नंदकिशोर राठौर, कवि गोपाल बैरागी स्पीक मैके को ऑर्डिनेटर श्रीमती चंदा डांगी, सक्षम संस्था सचिव डॉ रविन्द्र पाण्डेय, शिक्षाविद अजीजुल्लाह खालिद, कवि लेखक अजय डांगी, राजेन्द्र तिवारी कलाकार राहुल श्रीवास एवं अन्य गणमान्य जन उपस्थित रहे।

- डॉ. घनश्याम बटवाल की रिपोर्ट

RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

ISSN 2581-446X

1998 से निरंतर प्रकाशित

www.kalasamaymagazine.com

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

(वर्ष : 20+09=29) पूर्णांक-137,

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

वर्ष-9, अंक-2, अक्टूबर-नवम्बर 2025, मूल्य : ₹100/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

pnb
MERCHANT: KALA SAMAY
SCAN & PAY

कला समय: सहयोग राशि भुगतान हेतु क्यूआर कोड का उपयोग करे।

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❊ पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान ❊

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. कपिल तिवारी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव

कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
डॉ. महेशचन्द्र शांडिल्य

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

रेखाचित्र : मनोहर काजल

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
देवेन्द्र प्रकाश तिवारी

उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति

नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक

संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य

अरुण तिवारी
समसामयिक

हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

सदस्यता सहयोग राशि:

(रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त) साधारण डाक

वार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)	साधारण डाक
द्वैवार्षिक	:	1200 (व्यक्तिगत)	1400 (संस्थागत)	साधारण डाक
चार वर्ष	:	2300 (व्यक्तिगत)	2700 (संस्थागत)	साधारण डाक
आजीवन (10 वर्ष के लिए)	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)	साधारण डाक

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से संबंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

डॉ. मोहन यादव

मंजरी सिन्हा

अद्वैतवादिनी कौल

आचार्य प्रभुदयाल मिश्र

प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग

डॉ. मल्लिका बनर्जी

डॉ. कमला शंकर

वीणा पहाड़ी

केशव परांजपे

डॉ. रमा दास

आरती राव

सुकन्या सरकार

डॉ. शुप्रीत सिंह

डॉ. कुमार ऋषितोष

डॉ. लयोत्तमा उप्रेति

डॉ. प्रिया तिवारी

डॉ. कुलविन्दर कौर

सौगत दास

डॉ. वीथिका टिक्कू

डॉ. राहुल कुमार

सुज्ञान दानी

आचार्य जागृति

प्रो. रवि शर्मा

डॉ. प्रदीप मिश्र

गौरीशंकर दुबे

डॉ. पूरन सहगल

आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा

डॉ. प्रताप सिंह सोढ़ी

इस प्रतिष्ठा विशेषांक की अतिथि संपादिका

सुनीरा कासलीवाल व्यास

दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रोफेसर एवं
भूत पूर्व डीन व विभागाध्यक्ष, वाद्यों पर शोधपरक ग्रंथ की लेखिका तथा
राजस्थानी वाद्यों की विशेषज्ञा

- **अतिथि संपादक की कलम से...**
  - वाद्य कला का रिश्ता मानव सभ्यता के साथ जुड़ा है 5
- **संपादकीय**
  - प्रभात–कालीन पक्षी गाकर सूर्योदय की घोषणा करता ... 7
- **आलेख**
  - सितार का इटावा इमदादख़ानी घराना। / मंजरी सिन्हा 9
  - कश्मीर के वाद्य -एक अन्वेषण / अद्वैतवादिनी कौल 13
  - राजस्थान की समृद्ध शास्त्रीय वाद्य-परम्परा / प्रो. डॉ. मधु भट्ट तैलंग 18
  - तुम्बे का इतिहास एवं महत्व / प्रो. रवि शर्मा 22
  - प्राचीन मेसोपोटामिया, मिस्र और यूनान के .../डॉ. मल्लिका बनर्जी 25
  - गिटार की विकास यात्रा एवं भारतीय संगीत में ... / डॉ. कमला शंकर 29
  - कंठ के निकट का वाद्य – सारंगी / वीणा पहाड़ी 32
  - महाराष्ट्र के लोकसंगीत के तालवाद्य - संबल ... / केशव परांजपे 35
- **संस्मरण**
  - महान सरोद वादक, पद्म विभूषण उस्ताद अलाउद्दीन.../ डॉ. रमा दास 38
- **आलेख**
  - पक्कसारणि व सारणि मार्ग: आधुनिक कर्णाटक संगीत .../ आरती राव 40
  - गुलज़ार की मीरा (1979) में पं. रविशंकर का योगदान.../ सुकन्या सरकार 43
  - गुरमत संगीत में प्रयुक्त तन्त्री वाद्यों का विश्लेषण .../ डॉ. शुप्रीत सिंह 45
- **साक्षात्कार**
  - ''मैं शास्त्र को कभी नहीं छोड़ता'' युवा संतूर वादक श्री अभय सोपोरी से सुनीरा कासलीवाल की बातचीत 49
- **आलेख**
  - अवनद्ध वाद्य परंपरा में स्त्री सहभागिता .../ डॉ. कुमार ऋषितोष 53
  - भारतीय वाद्यों में तन्त्रियों का क्रमिक विकास / डॉ. लयोत्तमा उप्रेति 56
  - तबला वाद्य की उत्पत्ति एवं विकास / डॉ. प्रिया तिवारी 59
  - "शरन रानी वाद्य वीथिका" देश को एक अमूल्य... / डॉ. कुलविन्दर कौर 62
  - इसराज: इतिहास और शांतिनिकेतन अनुलग्नक / सौगत दास 65
  - शततंत्री से संतूर तक / डॉ. वीथिका टिक्कू 69
  - राजस्थान की संस्कृति और परम्परा / डॉ. राहुल कुमार 71
  - भारतीय संगीत में जलतरंग वाद्य / सुज्ञान दानी 79
  - वाद्य संगीत में योग का तत्व : शरीर, मन और आत्मा.../ आचार्य जागृति 81
  - जनजातीय समुदायों की पारंपरिक लोककथाओं में .../ डॉ. पूरन सहगल 83
  - मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस पर विशेष... / डॉ. मोहन यादव 86
  - उस्ताद अली अकबर खां साहब... जिनके नाम से.../ डॉ. प्रदीप मिश्र 88
  - शंकराचार्य और रामानुजाचार्य / गौरी शंकर दुबे 90
  - भारतीय ज्ञान परंपरा में महामाहेश्वर का .../ आचार्य प्रभुदयाल मिश्र 91
- **पुस्तक : समीक्षा**
  - आचार्य मिश्र की कृति 'भारतीय ज्ञान.../ आचार्य डॉ. महेशचन्द्र शर्मा 94
  - राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष करती कविताएँ / डॉ. प्रताप सिंह सोढ़ी 95
- **कला- चिन्तन**
  - अभिनंदन नया वर्ष और नव / भँवरलाल श्रीवास 97

शब्द संयोजन एवं आकल्पन – गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य आवरण – कला समय
छायाचित्र –मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार
सहयोग– धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र** : मनोहर काजल
आवरण सज्जा – मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

वाद्य कला का रिश्ता मानव सभ्यता के साथ जुड़ा है

"सबसे पहला वाद्य कौनसा हुआ यह प्रश्न प्राय: पूछा जाता है जिसमें मतमतान्तर हैं। डॉ. बी.सी.देवा के अनुसार मनुष्य का शरीर ही सर्व प्रथम वाद्य बना। जिस तरह मनुष्य ने अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों को थपथपाकर विविध ध्वनियों का निष्पादन किया और इस तरह उसे विभिन्न ध्वनि प्रकारों को उत्पन्न करने की प्रेरणा मिली। कुछ विद्वान घन वाद्यों को सर्वप्रथम वाद्य मानते हैं जिनमें पत्थर के दो टुकड़ों को आपस में टकराकर ध्वनि उत्पन्न की जाती थी। यह वास्तव में ताली का ही पर्याय है।"

भारतीय वाङ्गमय में 'वाद्य' उस उपकरण अथवा यंत्र को कहते हैं जो बोलता है अथवा जिसे बोलवाया जा सकता है। 'वदति इति वाद्य:' यह किसी भी वाद्य की परिभाषा कही गयी है। 'वाद्य' संज्ञा 'वद्' से बनी है जिसका अर्थ है बोलना। वद् की उत्पति वाक् से होती है। चूंकि वाक् की उत्पत्ति सर्वप्रथम मानव कण्ठ से होती है अत: हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मानव कण्ठ को भी वाद्य मानते हुए इसे 'गात्र वीणा' अथवा ईश्वरी वीणा, यह कहा है।

वाद्यों की उत्पत्ति कब व कैसे हुई इस प्रश्न के उत्तर में लगभग सभी विद्वान एकमत हैं कि मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही वाद्यों की उत्पत्ति हुई। मानव जब पाषाण युग में था उस समय मानव निर्मित वाद्य पाषाण के थे और आज जब हम कम्यूटर के युग में हैं हमारे वाद्य भी कम्प्यूटराइज़्ड हो गए हैं।

सबसे पहला वाद्य कौनसा हुआ यह प्रश्न प्राय: पूछा जाता है जिसमें मतमतान्तर हैं। डॉ. बी.सी.देवा के अनुसार मनुष्य का शरीर ही सर्व प्रथम वाद्य बना। जिस तरह मनुष्य ने अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों को थपथपाकर विविध ध्वनियों का निष्पादन किया और इस तरह उसे विभिन्न ध्वनि प्रकारों को उत्पन्न करने की प्रेरणा मिली। कुछ विद्वान घन वाद्यों को सर्वप्रथम वाद्य मानते हैं जिनमें पत्थर के दो टुकड़ों को आपस में टकराकर ध्वनि उत्पन्न की जाती थी। यह वास्तव में ताली का ही पर्याय है।

कई विद्वान सुषिर वाद्यों को सर्वप्रथम वाद्य मानते हैं क्योंकि ये वाद्य मनुष्य को प्रकृति से मिले हैं, जिनमें शंख और बाँसुरी प्रमुख हैं। बाद में इन्हीं ध्वनियों के आधार पर मनुष्य ने मिट्टी को पकाकर विविध सीटियों का निर्माण किया जिनसे स्वर लहरी भी प्राप्त होती थी।

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान 'कर्ट सैक्स' 'रैटिल' यानि झुनझुने को सबसे पहला वाद्य मानते हैं। इसकी प्रेरणा भी मनुष्य को प्रकृति से ही मिली। पेड़ों पर लगने वाले फल जब सूख जाते थे तो उनके भीतर के बीजों से विभिन्न ध्वनियाँ प्राप्त होती थीं। इसी से मनुष्य को झुनझुना बनाने की प्रेरणा मिली होगी। जिससे आगे चलकर घुंघरु जैसे घन वाद्यों की निर्मिती की गई।

इन सभी तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्भवत सबसे पहले घन वाद्य फिर सुषिर वाद्य और इनके बाद अवनद्ध वाद्य आए होंगे क्योंकि पेड़ की लकड़ी के कुन्दे को काटकर उसपर खाल मंढ़ने की प्रक्रिया सभ्यता के अगले चरण का क्रम रहा होगा। सभी विद्वान एक मत हैं कि तंत्री वाद्य सभ्यता के क्रम में सबसे उन्नत वाद्य हैं। इनकी उत्पत्ति मनुष्य के धनुष बाण से हुई होगी ऐसा अनुमान लगाया जाता है। और यह वाद्यों के क्रम में सबसे बाद में अस्तित्व में आए होंगे। वैसे भी मनुष्य को लय पहले मिली और स्वर बाद में आया होगा क्यूंकि विकास सदैव स्थूल से सूक्ष्म के क्रम में होता है।

प्रश्न उठता है कि किसी भी वाद्य में वो मूलभूत घटक क्या हैं जो उसे वाद्य की श्रेणी में रखते हैं। इसका उत्तर यही है कि किसी भी वाद्य में दो चीजों का होना अनिवार्य है। पहला वो पदार्थ या वस्तु जो कम्पमान है दूसरा उन कम्पनों को गूंज देने वाली कोई आकृति। उदाहरण के लिए यदि किसी अवनद्ध वाद्य को देखेंगे तो उसकी आच्छादित पुड़ी या छावनी कम्पमान वस्तु किन्तुइसके कम्पन को गूंज देने का काम इसके साथ जुड़ी हुई गोलाकार आकृति देती है जिस पर यह पुड़ी मढ़ी होती है। तबला हो नगाड़ा हो या छोटी दिमड़ी हो पुड़ी की ध्वनि को बड़ा करने का काम इसके साथ जुड़ी हुई आकृति ही करती है जिसे-अंग्रेजी में 'रैसोनेटर' कहते हैं। सितार, तानपुरा, रूद्र वीणा इत्यादि तंत्री वाद्यों में गूंज उत्पन्न करने का

काम तुम्बे करते हैं जो हमें प्रकृति से प्राप्त होते हैं।

'रैसोनेटर' के आकार-प्रकार और इसको बनाने के लिए प्रमुख धातु के बदलाव के साथ वाद्य की ध्वनि और उसकी टोनल क्वालिटी में अंतर प्राप्त होता है। वाद्य निर्माण एक अत्यन्त उच्च कोटि की कला है जिसका विकास मानव सभ्यता के प्रारम्भ से हुआ और यह विकास अभी भी चल रहा है।

विश्व की विभिन्न सभ्यताओं के वाद्यों की बनावट और उनके निर्माण की प्रक्रिया को जानना न सिर्फ हमें उस सभ्यता के सांगीतिक इतिहास और विकास की जानकारी देता है वरन् वहाँ के लोग कितने वैज्ञानिक हैं और सभ्यता कितनी उन्नत है इसकी भी जानकारी देते हैं। इसके साथ ही उस क्षेत्र विशेष के पेड़ों और जानवरों के बारे में भी पता चलता है। क्योंकि वाद्यों के निर्माण में परम्परागत रूप से विविध पेड़ों की लकड़ी जानवरों की खालों, हड्डी और सीगों का प्रयोग होता है। तंत्री वाद्यों की तंत्री निर्माण के लिए प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार की घासों का और तत्पश्चात पेड़ों के महीन रेशों, रेशम के धागों और साथ ही विविध पशुओं की आँतो का प्रयोग किया जाता रहा है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में गिद्ध के पंखों की हड्डियों से तंत्री वाद्यों की सारिकाएं (अंग्रेजी में जिन्हें फ्रेट्स कहते हैं) बनाने का उल्लेख मिलता है। राजस्थान में पाए जाने वाले वाद्य जन्तर में गोह नामक पशु की चमड़ी से सारिकाओं का निर्माण होता है।

विश्व की विभिन्न जातियों और सभ्यताओं के विविध वाद्यों का विकास क्रम खोजना और उसका अध्ययन करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जो रोचक होने के साथ ज्ञानवर्धक और विस्मय कारक भी होता है।

विभिन्न जनजातियों, लोक और शास्त्रीय संगीत के विविध वाद्यों पर आधारित 'कला समय' का यह द्वितीय विशेषांक वाद्यों के ऐसे ही विस्मयकारी लोक का दर्शन आपको कराएगा, ऐसा मेरा मानना है।

इस अंक के लिए विशेष तौर से वरिष्ठ लेखकों जैसे मंजरी सिन्हा, मधु भट्ट तैलंग, कमला शंकर, आरती राव, वीणा पहाड़ी, रमा दास, प्रदीप मिश्र, प्रिया तिवारी ने अपने अमूल्य लेख दिए हैं इन्होने हमारे देश की शास्त्रीय परम्पराओं में प्रचलित वाद्यों पर गम्भीर सामग्री उपलब्ध कराई है।

अद्वैतवादिनी कौल, केशव परांजपे, राहुल कुमार एवं शुप्रीत सिंहने क्रमश: काश्मीर, महाराष्ट्र, राजस्थान और पंजाब के वाद्यों पर शोधपरक आलेखों को प्रदान किया हैं।

संतूर और जल तरंग वाद्यों पर वीथिका टिक्कू और सुज्ञान दानी के आलेख हैं। डॉ. कुमार ऋषितोष ने महिला अवनद्ध वादिकाओं पर रोचक सामग्री दी है।

संतूर के अग्रणी युवा वादक श्री अभय रुस्तम सोपोरी का साक्षात्कार आपको सूफियाना घराने के सोपोरी बाज का परिचय देगा।

बाँकिया: श्यामाराम

रवि शर्मा जी के लेख से पाठकों को विविध तंत्री वाद्यों में प्रयुक्त होने वाले तुम्बे के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।

सौगत दास के आलेख से इसराज वाद्य और शान्तिनिकेतन के इतिहास का पता चलेगा। सुकन्या सरकार के आलेख में मीरा फिल्म में पं. रविशकर जी के अविस्मरणीय संगीत में वाद्यों के प्रयोग की जानकारी प्राप्त होगी। लयोत्तमा उप्रेती के शोधपरक लेख से भारतीय वाद्यों के क्रमिक विकास एवं मल्लिका बनर्जी के आलेख से प्राचीन सभ्यताओं में प्रचलित तंत्री वाद्यों की जानकारी प्राप्त होगी। आचार्य जागृति जी और डॉ. पूरन सहगल के आलेख अपने आप में अनूठे विषय पर हैं।

सभी विद्वान लेखकों को उनके आलेखों के लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हुए हर्ष है कि सभी आलेखों से सुसज्जित यह वाद्य विशेषांक भाग 2 आपके हाथों में है। वाद्यों की अनूठी और रोमांचकारी जानकारियों से भरा यह विशेषांक आपको सुरूचिपूर्ण लगेगा। यदि इस विशेषांक से आपके मन में वाद्यों की इस अचरज भरी दुनियाँ की क्षणिक भी झांकी मिले और आप इस जानकारी को बढ़ाने के लिए प्रवृत्त होंगे तो हमारा यह प्रयास सफल होगा।

कला समय के श्री भंवरलाल श्रीवास ने इस अंक को संपादित करने का जो कार्य भार मुझे दिया उसके लिए मैं सम्पूर्ण कला समय परिवार की आभारी हूँ। शेष शुभ

देव उठनी एकादशी

1 नवम्बर 2025

सुनीरा कासलीवाल व्यास

लेखिका : दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रोफेसर एवं भूत पूर्व डीन व विभागाध्यक्ष, वाद्यों पर शोधपरक ग्रंथ की लेखिका तथा राजस्थानी वाद्यों की विशेषज्ञा

संपादकीय

प्रभात–कालीन पक्षी गाकर सूर्योदय की घोषणा करता, वैसे ही सारे संस्कार मंगलवाद्यों से सम्पन्न किए जाते हैं

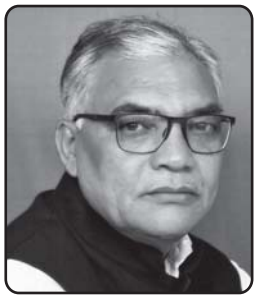

"आज सर्वत्र असंतोष और बेचैनी व्याप्त है। इससे संगीत ही राहत दिला सकता है। भारतीय संगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए। संस्कृति एवं संगीत के बिना जीवन नीरस हो जाएगा भारत में तो जीवन सदा संगीतमय रहा है। सामवेद संगीत की सर्वोतम धरोहर है। संगीत भक्ति का माध्यम रहा है। भगवान कृष्ण पूर्णावतार के रूप में पूज्य हैं और सदा बाँसुरी युक्त रहे हैं। उन्होंने कहा था – संगीत सीखे बिना किसी को मोक्ष नहीं मिल सकता। भगवान शंकर तो फक्कड़ होने के बावजूद संगीत के आदि सृष्टा माने जाते हैं। स्वदेशी संगीत मीठा संगीत है इसे विदेशी दूषण से बचाना चाहिए।"

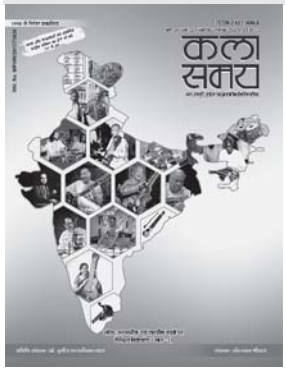

' तत् को पहले कहत हैं, वितत दूसरो जान।
तीजो घन चौथे शिखर, तानसेन परमान।।
तार लगे सब साज़ के, सो तत् ही तुम मान।
चरम मढ्यों जाको मुखर, वितत सु कहे बखान।।'

प्रशान्त चेतना के बन्धन के समाज, मुख पर बिखरी रेखओं के बीच में उठी हुई सुडौल नासिक को गर्व के प्रमाण – पत्र के अतिरिक्त कौन – सा नाम दिया जावे! पर वह गर्व मानो मनुष्य होने का गर्व था, इतर अहंकार नहीं; इसी से उसके सामने मनुष्य, मनुष्य के नाते प्रसन्नता का अनुभव करता है, स्पर्धा या ईर्ष्या का नहीं। ठीक उसी प्रकार 'कला सौन्दर्य का दिग्दर्शन है, सौन्दर्य दिव्यज्ञान का उद्घाटन है' वैसे ही वाद्य के प्रतीक से रस और उस रस से प्रतीकात्मकता की खोज है, जब कभी शंख, घण्टी, घण्टा, घड़ियाल की ध्वनि उत्पन्न हो तो वहाँ शंख, घण्टा, घण्टी ईश्वरोपासना का प्रतीक माना जाता है। इसी प्रकार नगाड़ा, भेरी, दुन्दुभि, शंख , तुरहि, आदि वाद्य जिन स्थानों पर बजाए जाते हैं, उन स्थानों को बिना देखे ही हम यह समझ लेते हैं कि वहाँ युद्ध होने जा रहा या युद्ध की कोई घोषणा है। दृश्य सामने न होने पर ये वाद्य प्रतीकात्मक रूप से दृश्य का बोध कराते हैं, वाद्यों के प्रयोग से दृश्य न देखते हुए भी यह प्रतीत होता है, कि यह ध्वनि युद्ध की है या पूजा अर्चना आदि की। संगीत हमारे दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, जिसके बिना हमारे उल्लास अधूरे हैं। संगीत में वाद्य और रस का अनूठा संयोग संगीत को और सारगर्भित बनाता है। संगीत वाद्यों में रस को लेकर पृथक्कीकरण पाया जाता है, जैसे कि सितार, शहनाई, वंशी आदि वाद्य श्रृंगार प्रधान वाद्य हैं। भेरी, मृदंग, दुन्दुभि युद्ध के लिए प्रेरित करने वीर रस युक्त वाद्य हैं। सारंगी इत्यादि वाद्य करुण रस प्रधान वाद्य हैं। वाद्यों में स्वरों के माध्यम से रस उत्पन्न किया जाता है, वाद्यों का रसात्मक स्वर वाद्य की विशेष बनावट पर निर्भर करता है। वाद्य सम्पूर्ण होते हैं, वाद्यों का अपना स्वरूप वादक पर निर्भर करता है, जैसे वाद्य हो, सितार तो यह चंचल प्रकृति का वाद्य है, इसमें श्रृंगार रस होता है, गंभीर वाद्य जैसे सारंगी करुण रस प्रधान है। तबला श्रृंगार रस प्रधान वाद्य है, वाद्य विशेष मानव के कोमल भावों को प्रकट करने में सक्षम होता है। रस संगीत को मूर्त रूप देता है, जो रसान्नुस्वादन करने पर मधुर और आनन्ददायी लगता है। सितार यदि समरसता पा ले तो फिर झंकार के जन्म का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि वह तो हर चोट के उत्तर में उठती है और सम-विषम स्वरों को एक विशेष क्रम में रखकर दूसरों के निकट संगीत बना देती है। यदि आघात या आघात का अभाव दोनों एक मौन या एक स्वर बन गए हैं, तब फिर संगीत का सृजन और लय सम्भव नहीं। आज सर्वत्र असंतोष और बेचैनी व्याप्त है। इससे संगीत ही राहत दिला सकता है। भारतीय संगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए। संस्कृति एवं संगीत के बिना जीवन नीरस हो जाएगा भारत में तो जीवन सदा संगीतमय रहा है। सामवेद संगीत की सर्वोतम धरोहर है। संगीत भक्ति का माध्यम रहा है। भगवान कृष्ण पूर्णावतार के रूप में पूज्य हैं और सदा बाँसुरी युक्त रहे हैं। उन्होंने कहा था – संगीत सीखे बिना किसी को मोक्ष नहीं मिल सकता। भगवान शंकर तो फक्कड़ होने के बावजूद संगीत के आदि सृष्टा माने जाते हैं। स्वदेशी संगीत मीठा संगीत है इसे विदेशी दूषण से बचाना चाहिए।

संगीत पूरी सृष्टि में परिव्याप्त है। वायुलहरी में भी उसकी गूँज है। रेडियों और ट्रांसमीटर्स ध्वनितरंगे चौबीसों घण्टे हमारे कानों में गूँजती रहती हैं। उन्हीं का पर्याय संगीत है। वर्षा की झड़ी, समुद्र के गर्जन, झरने की कलकल, पेड -पत्तों की चरमराहट और चिड़ियों की चहचहाहट में भी संगीत की ही ध्वनि है। सर्वविदित हैं कि संगीत के प्रभाव से दीपक जल उठते थे। मेद्य वर्षा करने लगते थे। पेड़-पौधों और फसलों की उपज में वृद्धि होने लगती है। फूल खिल उठते हैं। सर्प मुग्ध होकर, फन उठाकर डोलने लगता है। गायें जंगल से लौट आती हैं और अधिक दूध देने लगती हैं। कृष्ण की मुरलिया से तो सारा